प्रथम अध्याय

“गिरिराज किशोर : व्यक्ति एवं साहित्य”

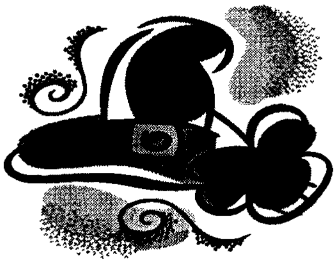

प्रथम अध्याय

"गिरिराज किशोर : व्यक्ति एवं साहित्य"

प्रस्तावना :

आधुनिक हिंदी साहित्य में अपनी रचनाओं द्वारा अलग पहचान बनानेवालों में गिरिराज किशोर अग्रणी हैं। किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अनुसंधान करने से पहले उनकी जीवन यात्रा का परिचय कराना अनिवार्य है। व्यक्ति के संस्कारों, परिस्थितियों एवं अनुभवों का प्रभाव साहित्य पर होता है। साहित्यकार अपनी रचनाओं में जीवनानुभवों, सुख-दु:खों, स्मृतियों एवं कल्पनाओं की अभिव्यक्ति करता है। जीवनानुभव एवं समसामायिक परिस्थितियों का उसके व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण सहयोग होता हैं। किसी भी साहित्यकार का जीवन उसके साहित्य के माध्यम से व्यक्त होता है और उनके जीवन पर आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश का गहरा प्रभाव होता है।

अत: साहित्यकार का जीवन उसके साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। इसलिए साहित्यकार की जीवनयात्रा के विभिन्न पहलुओं को समझना उनके साहित्य को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी गिरिराज किशोर के साहित्य को समझने के लिए उनके जीवन को जानना-समझना बहुत अनिवार्य है। साहित्यकार को जानने समझने के लिए उनकी रचनाओं को तथा लेखकीय जीवन को परखना भी आवश्यक होता है। वस्तुत: गिरिराज किशोर एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनके जीवन और सृजन को परस्पर अलग करना प्राय: असम्भव है। अत: प्रस्तुत अध्याय में गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व एवं साहित्यिक रचनाओं का परिचयात्मक विवेचन इस प्रकार है -

1.1 जीवन परिचय :

1.1.1 जन्म :

गिरिराज किशोर जी का जन्म 8 जुलाई, 1937 ई. को पश्चिमी उत्तर

प्रदेश के एक जमींदार परिवार में हुआ।

1.1.2 परिवार :

गिरिराज किशोर का परिवार मुजफ्फरनगर के जमींदार परिवारों में से एक था। इसलिए सामंती आचरण और संस्कारों के साथ-साथ पाश्चात्य तौर-तरीके उनके परिवार में रूढ़ हो चुके थे। किन्तु फिर भी उनका परिवार सनातनी हिंदू परिवार ही था। किशोर का लालन-पालन एक बड़े जमींदार परिवार में हुआ। परिवार के सदस्यों का उनके व्यक्तित्व निर्माण में विशेष योगदान रहा है।

1.1.2.1 माता :

गिरिराज किशोर की माताजी का नाम 'श्रीमती तारावती' था। किशोर के पिताजी की वह दूसरी पत्नी थी। डेढ़ साल की छोटी-सी उम्र में ही किशोर की माताजी का देहावसान होने के कारण वे मातृस्नेह से वंचित रहें। परिणामत: उनका लालन-पालन उनके दादाजी ने किया। उनकी माँ गाना अच्छा गाती थी किन्तु जमींदार परिवार में विवाह होने के पश्चात् उनकी संगीत कला चार दिवारी में बंद ही रही। इस संदर्भ में किशोर लिखते हैं - "जिन्होंने मेरी माँ को देखा है, वे कहते हैं, वे गाना अच्छा गाती थीं। एक दकियानूसी परिवार में ब्याहें जाने के कारण उस गाने की कोई सार्थकता नहीं हुई।"[1]

1.1.2.2 पिता :

गिरिराज किशोर के पिता का नाम 'श्री सूरज प्रकाश' था। वे जमींदार थे। जमींदार होने के कारण आस-पास के गाँवों में उन्हें इज्जत मिलती थी। श्री सूरज प्रकाश के तीन विवाह हुए थे। पहला विवाह 'शांती देवी' से हुआ था। उनसे कोई संतान प्राप्ति न होने के कारण दूसरा विवाह 'तारावती देवी' से किया। किशोर तारावती के पुत्र हैं। दुर्भाग्य से श्रीमती तारावती का बीमारी के कारण निधन हो गया। इसलिए

---

1. डॉ.सुरेश सदावर्ते - कथाकार गिरिराज किशोर, पृष्ठ - 18

प्रकाश जी ने तीसरा विवाह 'रामदुलारी देवी' से किया। प्रकाश जी का देहावसान 28 जून, 1988 ई. को मुजफ्फरनगर में हुआ।

1.1.2.3 दादा :

गिरिराज किशोर के दादाजी का नाम 'हरिशंकर' था। लोग उन्हें 'बाबा' नाम से पुकारते थे। बचपन से ही किशोर का लालन-पालन दादाजी ने ही किया। दादाजी ग़ज़ब के गुस्सेबाज और आत्मसम्मानी व्यक्ति थे। वे संगीत में काफी रुचि रखते थे। सितार बहुत अच्छा बजाते थे। उनके एक दोस्त उनका सितार अपनी बेटी के लिए ले गए। वह सितार उनके मित्र ने लौटाया नहीं तब से दादाजी ने कभी सितार नहीं बजाया। श्री हरिशंकर लाल एक जमींदार थे। वे अंग्रेज भक्त होने के साथ-साथ सामंती सभ्यता के प्रतिनिधि भी थे। धर्म के प्रति अतिसंवेदनशील थे। रूढ़ि, परंपरा एवं अंध-विश्वासों का पालन उनके परिवार द्‌वारा होता था।

1.1.3 बचपन :

ड़ेढ साल की छोटी-सी उम्र में ही गिरिराज किशोर की माँ चल बसी और वे मातृ-स्नेह से वंचित रहे। उनका लालन-पालन उनके दादाजी ने किया। किशोर के जीवन के बारह साल मुजफ्फरनगर में ही व्यतित हुए। माँ की मृत्यु के बाद उन्हें विविध समस्याओं का सामना करना पड़ा। उनके जीवन की यह कमी दूर करने का प्रयास उनके दादाजी ने किया। वे किशोर को हमेशा अपने साथ रखते थें। इसलिए किशोर के जीवन पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा। शैशवावस्था में माँ की मृत्यु हो जाने का दर्द उन्हें बार-बार सताता रहा।

1.1.4 शिक्षा :

गिरिराज किशोर की प्रारंभिक शिक्षा मुजफ्फरनगर में ही हुई। जिस सामंती परिवार में उनका जन्म हुआ था, वे सामंत अंग्रेजों के भक्त थे। उनके परिवार में उर्दू, फारसी और अंग्रेजी का प्रभाव था। उनके दादाजी भी अंग्रेजी, फारसी और अरबी के विद्‌वान थे, उनके परिवार में हिंदी को काँग्रेसी भाषा कहकर हीनता की दृष्टि से देखा

जाता था। उनके घरवालों की इच्छा थी कि किशोर अंग्रेजी या फारसी पढ़े लेकिन उन्होंने हिंदी को ही चुना। उनके मन में हिंदी के प्रति जो प्रेम था, उसका श्रेय वे अपने पिताजी के छोटे भाई को देते हैं - "मेरे पितामह उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के अतिरिक्त न तो कोई भाषा जानते थें न इन भाषाओं के अतिरिक्त किसी और भाषा के लिए उनके दिल में सम्मान नाम की कोई चीज थी। वह तो पितामह के छोटे भाई ने मुझे हिंदी पढ़ाने के लिए लढ़ाई लड़ी थी, वरना मैं भी उर्दूवादी हुआ होता।"[1]

गिरिराज ने प्राथमिक शिक्षा के साथ बी.ए. की उपाधि मुजफ्फरनगर के स्थानिक महाविद्यालय से **1958** ई. में पूरी की। **1966** ई. में एम.एस.डब्लू. की स्नातकोत्तर उपाधि सामाजिक विज्ञान संस्थान, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से हासिल की।

1.1.5 नौकरी तथा व्यवसाय :

स्वतंत्रता के बाद जमींदारी प्रथा नामशेष हो गई और ऐसे परिवारों को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा। इसलिए ऐसे लोगों को नौकरी तथा व्यवसाय में आना पड़ा। किशोर **1960** ई. में एम.एस.डब्लू. की उपाधि प्राप्त करने के बाद इलाहाबाद में एक फैक्ट्री में लेबर ऑफिसर के रूप में कार्यरत रहें लेकिन बीमारी से काम पर अनुपस्थित रहने के कारण उन्हें नौकरी से निकाला गया। नौकरी छुटने के बाद **1960** ई.से **1962** ई.तक वे उत्तर प्रदेश शासन के 'श्रम एवं प्रशिक्षण निदेशालय' में सहायक सेवायोजन अधिकारी के रूप में कार्यरत रहें। किन्तु प्रतिकूल स्थिति के कारण उन्होंने उस पद से इस्तीफा दे दिया। बाद में उत्तर प्रदेश के 'हरिजन एवं परिवार कल्याण निदेशालय' में प्रोबेशन अधिकारी के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। यहाँ उन्होंने **1962** ई. से **1964** ई. तक कार्य किया। इस पद पर काम करते समय उन्हें अनेक कटु

1. गिरिराज किशोर - संवाद सेतु, पृष्ठ -32

अनुभवों का सामना करना पड़ा। इसी कारण उन्होंने इस पद को भी त्याग दिया। 1964 ई. से जुलाई, 1966 ई. के बीच इलाहाबाद में रहकर उन्होंने अपने लेखन कार्य की ओर ध्यान दिया।

जुलाई, 1966 ई. में उनकी नियुक्ति कानपुर विश्वविद्यालय में सहायक कुलसचिव के पद पर हुई और वे इलाहाबाद छोड़कर कानपुर आ गए। बाद में उनकी उपकुलसचिव के पद पर नियुक्ति हो गई। कानपुर विश्वविद्यालय का उनका सेवाकाल जुलाई, 1966 ई. से 1974 ई. तक रहा। दिसंबर, 1975 ई. में उन्होंने 'भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर' (आई.आई.टी.) में कुलसचिव पद का कार्यभार सँभाला। वहाँ चार वर्ष तक उन्होंने कार्य किया। परंतु संस्थान के तानाशाह निर्देशक से कहा-सूना होने के कारण उन्हें निलंबित किया गया। 1979 ई. का पूरा साल और 1980 ई. के प्रारंभिक पाँच महिने किसी निर्वाह भत्ते के बिना उनको रहना पड़ा। इस स्थिति का उन्होंने डटकर सामना किया। सच्चाई उनके साथ थी इसी बल पर हाईकोर्ट में वह मुकदमा जीत गए और मई, 1980 ई. को सम्मान के साथ आई.आई.टी. के कुलसचिव पद पर विराजमान हुए।

उस पद पर उन्होंने 1983 ई. तक कार्य किया। तत् पश्चात नवंबर, 1984 ई. में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के रचनात्मक लेखन एवं प्रकाशमान केंद्र के अध्यक्ष पद पर उन्हें नियुक्त किया गया। इसी पद से 31 जुलाई, 1997 ई. को उन्होंने अवकाश ग्रहण कर लिया।

अपनी नौकरी के निलंबन और उससे जुड़े अनुभवों को किशोर जुटाते रहें। अत: अपने जीवनानुभवों को ही वे वाणी देते रहें हैं।

1.1.6 वैवाहिक जीवन :

गिरिराज किशोर का विवाह 1967 ई. में श्रीमती मीरा के साथ हुआ। मीरा शांत तथा सरल स्वभाव वाली उच्च शिक्षित नारी हैं। उन्होंने एम्.ए. (हिंदी) और

बी.टी.की उपाधि प्राप्त की है। जया, शिवा और अनीश उनकी तीन संताने हैं। मिरा ने हर कठिन परिस्थिति में गिरिराज किशोर का साथ दिया। उन्होंने दिल्ली में कुछ साल तक अध्यापन का कार्य करके परिवार का भार सँभाला और हर संकट में अपने पति की सहायता की। गिरिराज किशोर को मीरा के रूप में शालीन तथा सुशील पत्नी मिली। जिंदगी के हर कदम पर मीरा जी उनका साथ बखूबी से निभाती आ रही है। उनका वैवाहिक जीवन पूर्णत: संतुष्ट है। मीरा से उन्हें लेखन एवं जीवन में महत्त्वपूर्ण सहयोग मिला है। इस संदर्भ में गिरिराज किशोर कहते है - "मेरे घरवालों का सहयोग तो अद्‌वितीय है ही खास तौर से मेरी पत्नी मीरा का। वे मेरी जबरदस्त 'क्रिटिक' है परंतु मेरे कामों में भरपूर सहयोग देती है।"[1] इससे यह स्पष्ट होता है कि, किशोर के लेखन और जीवन में जहाँ आवश्यकता हो वहाँ मीरा जी प्रेरक तथा सहायक बनी हैं।

1.1.7 लेखन कार्य :

गिरिराज किशोर ने स्कूली जीवन से ही लिखना आरंभ किया था। उन्होंने लेखन का आरंभ छठी कक्षा से किया और आज भी लिख रहे हैं। अत: साहित्य में उनकी रूचि बचपन से ही थी। किशोरावस्था में ही उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी।उन्हीं के शब्दों में - "छठीं क्लास से लिखना और अब तक लिखते चला जाना अपनी ही एक ऐसी खोज का सिलसिला है। जिसका ताजिंदगी रुकना मुश्किल है।"[2] हाइस्कूल में पढ़ते समय से ही उनकी रुचि उपन्यास और कहानी पढ़ने की थी लेकिन उनके परिवार के सामंती वातावरण के कारण उनको प्रखर विरोध हुआ किन्तु उन्होंने हिंदी पढ़ने लिखने का शौक नहीं छोड़ा। हिंदी लेखकों के प्रभावों से उन्होंने कहानी लेखन प्रारंभ किया। उनका लेखन कार्य शरतबाबू, प्रेमचंद, प्रसाद, अज्ञेय, जैनेंद्र और यशपाल आदि लेखकों का साहित्य पढ़ते-पढ़ते प्रारंभ हो गया।

गिरिराज किशोर की पहली कहानी 1959 ई. में आगरा से प्रकाशित

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ -16
2. संपा. बलराम - अपने आस-पास, पृष्ठ -45

साप्ताहिक 'सैनिक' में छपी थी। परंतु इससे पहले नवीं कक्षा में उनकी एक और कहानी 'रत्न कटारी घी जले' कॉलेज मैगजीन में छपी थी। 1960 ई. में उनकी रचनाएँ 'दैनिक हिंदुस्थान' के रविवारीय परिशिष्ट में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद 'मध्य प्रदेश संदेश', 'कादम्बिनी' और 'साप्ताहिक हिंदुस्थान' में उनकी कई रचनाएँ प्रकाशित हुई। अपनी साहित्य लेखन की यात्रा में उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, अनुवाद, बालसाहित्य आदि विभिन्न विधाओं में सशक्त साहित्य का निर्माण किया है।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

व्यक्ति की महत्त्वपूर्ण विशेषता उसका व्यक्तित्व है। "व्यक्तित्व शब्द भाववाचक संज्ञा है। व्यक्ति के क्षेत्र में जिन गुणों या विशेषताओं का समावेश होता है, वे सब व्यक्तित्व के अंतर्गत आते हैं। व्यक्ति की ऐसी विशेषता उसे दूसरों से अलग बनाती है। किसी व्यक्ति की विशेषताओं का समुदाय ही व्यक्तित्व हैं।"[1] अर्थात व्यक्तित्व ही व्यक्ति की पहचान होती है।

बहुमुखी व्यक्तित्व के रचनाकार गिरिराज किशोर ने मानव जीवन को जिस रूप में देखा, परखा, जाना है उससे उनका व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व में ऐसी विशेषताओं का समुदाय है जिनके कारण हिंदी साहित्य में उनकी अलग पहचान है। उन्होंने अपने समस्त साहित्य में मानवीय जीवन को देखा, समझा है। उनका व्यक्तित्व भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण है। वे एक श्रेष्ठ व्यक्ति हैं जिनका व्यक्तित्व बहुमुखी, संघर्षशील, मिलनसार, गांधीवाद से प्रभावित रहा है। यहाँ उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर संक्षेप में प्रकाश डाला है।

1.2.1 बहुमुखी व्यक्तित्व :

गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है। एक सामंती परिवार में पैदा होने के बावजूद भी उनका व्यक्तित्व विविधता से भरा है। भारतीय संस्कारों को

---

1. डॉ.सुरेश कानडे - गिरिराज किशोर की कहानियों में युगचेतना, पृष्ठ -18

किशोर के व्यक्तित्व में पाया जा सकता है। उन्होंने एक साथ उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, संस्मरण एवं डायरी आदि साहित्य की विविध विधाओं में अपनी प्रतिभा के बल पर मुक्त संचार किया है। एक व्यक्ति के रूप में उनकी दृष्टि और रचना का फलक व्यापक है। इसी कारण हिंदी साहित्य में एक सशक्त रचनाकार के रूप में गिरिराज का अपना एक अलग स्थान ही उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का ही प्रमाण है।

1.2.2 व्यापक अनुभव विश्व :

गिरिराज किशोर ने मानवी जीवन के अनुभवों को स्वयं जीते हुए अपनी कलम के माध्यम से कागज पर रेखांकित किया है। अपनी नौकरी के निलंबन और उससे जुड़े अनुभवों को वे अर्जित पूँजी मानते हैं। इस अनुभवों को उन्होंने स्वयं को पहचान ने का सुअवसर माना। उन्होंने अपने अनुभवों के बल पर अनेक अछूते विषयों को पहली बार लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनका साहित्य केवल पाठकों के मनोरंजन का साधन नहीं है, तो उनके व्यापक अनुभव विश्व का विस्तार है। जो सोचने-विचार करने के लिए मजबूर या विवश कर देता है।

1.2.3 मिलनसार :

गिरिराज किशोर का जन्म सामंती परिवार में हुआ है लेकिन वे सामंती अहंकार से मुक्त है। किसी भी प्रकार की दकियानूसी मानसिकता या अहंकार उन्हें छू भी न पाया है। अगर उन्हें कोई मिलने आता है तो वे अपना काम छोड़कर उससे आत्मीयता से बातें करते हैं। किशोर ने अपनी जिंदगी में तरह-तरह की नौकरियाँ की। हर तरह के लोगों से मिलते रहें। जब वे कानपुर आई.आई.टी. में थे तब उनसे मिलने आनेवाले लोगों में बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक, साहित्यिक, कलाकार, कर्मचारी आदि तरह-तरह के लोग थे। वे मिलनेवाले से बड़ी सहजता से मिलते रहे हैं। यह देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि किशोर में रचनात्मकता के साथ-साथ मानवीय संबंध जोड़ने का अच्छा स्वभाव गुण है।

1.2.4 प्रामाणिकता :

गिरिराज किशोर को अनेक बार नौकरी से निष्कासित किया गया। फिर भी वे अपनी सच्चाई, ईमानदारी और प्रामाणिकता के रास्ते से एक पल भी विचलित नहीं हुए। साहित्य सृजन और नौकरी को उन्होंने अपना धर्म माना और उसे ईमानदारी से निभाया भी। किशोर जी ने जीवन में जो भोगा, जिया, पाया उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति अपने साहित्य में प्रस्तुत की है। जब उन्हें आई.आई.टी. कानपुर के रजिस्टार पद से हटा दिया तब उन्होंने कहा- "वहाँ से रजिस्टार के पद पर आई.आई.टी. आ गया। तानाशाह निदेशक ने निलंबित कर दिया, पर मानता हूँ कि सच्चाई मेरे साथ खड़ी है। सच्चाई में ठोंकरे भी खानी पड़ती हैं और आदमी गिर-गिर कर उठने के अवसरों का धनी भी होता हैं।"[1] इसी सच्ची भावना के बल पर किशोर उच्च न्यायालय में मुकदमा जीत गए और सम्मान के साथ आई.आई.टी. में उसी पद विराजमान हुए।

1.2.5 संघर्षशील :

गिरिराज किशोर ने बचपन से ही अनेक आपत्तियों का डटकर सामना करना पड़ा। शैशवकाल में ही उनकी माता का देहावसान हो गया। गिरिराज किशोर को बार-बार नौकरी से निष्कासित किया जाता रहा था। फिर भी वे संघर्षरत रहें। अपना लेखन कार्य उन्होंने जारी रखा। सुमन राजे से साक्षात्कार में उन्होंने कहा है कि-"यह जरूरी है कि लेखक इस तरह की या और विषम स्थितियों से गुजरे। मुझे लगता है, अगर आगे भी कोई ऐसी स्थिति आयी तो मुझे एक अच्छा लेखक बनने में उससे मदद मिलेगी।"[2] इसी तरह उन्होंने संघर्ष को ही अपने लेखन का अंग बनाया। लेखन शक्ति ने उन्हें समाज को पहचानने के साथ ही कटु प्रसंगों का सामना करने की ताकद दी।

आज समाज अनेक बुराईयों से ग्रस्त है। भ्रष्टाचार, कालाबाजार, जातीयता, स्वार्थपरकता, सत्तालोलुपता आदि से आज का सामाजिक वातावरण दूषित

---

1. संपा.बलराम - अपने आस-पास, पृष्ठ -32
2. संपा.कन्हैयालाल नंदन - सारिका (पत्रिका) - सितंबर 1981, पृष्ठ -15

हुआ है। किशोर संघर्ष में विश्वास रखनेवाले लेखक हैं। उन्होंने अपने साहित्य द्वारा भ्रष्ट समाज व्यवस्था पर तीखा प्रहार एवं व्यंग्य करके जनता को उसके खिलाफ संघर्ष करने के लिए उत्साहित किया है। अत: संघर्ष ही उनके साहित्य सृजन का साथी है।

1.2.6 गांधी विचारधारा से प्रभावित :

गिरिराज किशोर के जीवन पर उनके दादाजी का गहरा प्रभाव है। प्रेमचंद और शरतचंद्र के प्रभाव से उन्होंने कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया। "अपने प्रारंभिक रचनात्मक जीवन में गिरिराज किशोर अनेक रचनाकारों से प्रभावित थे। उनमें जयशंकर प्रसाद से लेकर शैलेश माटियानी, अमरकांत जैसे अनेक कलाकार हैं।"[1] किशोर की प्रारंभिक रचनाओं पर किसी एक विचारधारा का प्रभाव नहीं दिखाई नहीं देता लेकिन बाद में उनकी प्रौढ रचनाओं में गांधी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। परिणामस्वरूप उन्होंने महात्मा गांधी जी के दक्षिण आफ्रीकीय जीवन पर 'पहला गिरमिटिया' जैसा बृहत्काय उपन्यास लिखा। यह उपन्यास उनके आठ वर्षो तक के गहन अन्वेषण का ही परिणाम है। उपन्यास लेखन के समय उन्होंने दक्षिण आफ्रीका, इंग्लैंड, मॉरिशस की यात्राएँ की। उस यात्रा का तथा स्थलों का परिस्थितिनुरूप चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में पाया जाता है।

1.3 साहित्य संपदा :

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में गिरिराज किशोर का अपना एक अलग स्थान है। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की तरह उनका कृतित्व भी विविधता से संपन्न है। लेखन के आरंभ से आज तक उन्होंने पच्चास तक मौलिक रचनाओं का सृजन किया है। इसमें साहित्य की उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, संस्मरण एवं डायरी आदि गद्य विधाओं में लेखन किया है। किशोर के शब्दों में - "कई बार विधा की सीमा और उसमें लिख सकने की अपनी अपर्याप्तता मुझे दूसरी विधा की ओर ले

---

1. डॉ.सुरेश साळुंखे - गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य ः एक अनुशीलन -पृष्ठ -29

जाती है। नाटक, लेख यहां तक समीक्षा भी लिखता हूँ। संभव है सभी विधाओं के माध्यम से लोगों के पास पहुँचना चाहता हूँ। मंजिल लम्बी है। ......कुछ नाटक के जरिए, कुछ कहानियों और उपन्यास के सहारे, गरज की जैसे भी हो, मैं अपनी बात कहना चाहता हूँ।"[1] अत: स्पष्ट है कि किशोर अपनी बात लोगों तक पहुँचाने के लिए साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य करते आए हैं। यहाँ उनकी साहित्य संपदा का परिचय कराना अनिवार्य है।

1.3.1 उपन्यास :

गिरिराज किशोर ने बीसवीं शती के अंतिम चार दशकों से विभिन्न विधाओं एवं विषयों पर लेखन कार्य किया है। इसमें उपन्यास के क्षेत्र में उनकी अपनी अलग पहचान है। व्यापक अनुभव विश्व एवं सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति ने उनके उपन्यास साहित्य को वैविध्यपूर्ण एवं बहुआयामी बनाया है। उनकी उपन्यास यात्रा सन् 1966 ई. में प्रकाशित 'लोग' उपन्यास से आरंभ होती है जो आज भी जारी है। किशोर ने अब तक सोलह उपन्यासों का सृजन किया है। अपने उपन्यासों में उन्होंने शिल्प एवं भाषा के स्तर पर विविध प्रयोग भी किये है। साथ ही अनेक अछूते विषयों को सफलता से अभिव्यक्त किया है। यहाँ उनके उपन्यास साहित्य का कालक्रमानुसार परिचयात्मक विवेचन प्रस्तुत है -

1.3.1.1 लोग :

'लोग' गिरिराज किशोर का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन 1966 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। 'लोग' उपन्यास की सारी घटनाएँ एक बालक के माध्यम से आत्मकथनात्मक शैली में व्यक्त हुई है। इसमें स्वतंत्रता पूर्व के एक विशिष्ट वर्ग का चित्रण है जो स्वतंत्रता प्राप्ति की समीपता को देखकर असुरक्षा का अनुभव कर रहा है। साथ-साथ भविष्य में हमारा क्या होगा? इस प्रश्न से

---

1. संपा. माणिका मोहनी - वैचारिकी, 15 अगस्त, 1986, पृष्ठ -47

चिंतित भी है। सामंती व्यवस्था के विघटन की शुरूआत तथा आजादी के पूर्व भारतीय सामंतों की विघटित मानसिकता का यथार्थ वर्णन 'लोग' उपन्यास में हुआ है। यह विशिष्ट वर्ग से संबंधित होते हुए भी जनसामान्यों के जीवन को अधोरेखित करता है।

1.3.1.2 चिड़ियाघर :

गिरिराज किशोर का दूसरा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है - 'चिड़ियाघर'। नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली से **1968** ई.में इसका प्रकाशन हुआ है। इसमें आजादी के परवर्ती काल के कार्यालयीन जीवन को यथार्थता रूप में अभिव्यक्त किया है। इस उपन्यास का कथानक चार दिवारों में सीमित है। इसमें एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज को ही चिड़ियाघर बताया है। जहाँ किसी को नौकरी की अपेक्षा सिर्फ झूठी आशा दिखाकर बेकार लोगों के 'फस्ट्रेशन' को 'डाइवर्ट' किया जाता है। "दफ्तर दफ्तर न रहकर 'चिड़ियाघर' बने हुए हैं, जहाँ लोगों की बेरोजगारी समाप्त करने के नाम पर उनके साथ कितनी धोखाधड़ी, बेईमानी होती है, 'एम्प्लायमेंट एक्सचेंज' में रिश्वतखोरी, छीना-झपटी, हेराफेरी, लुट-खसोट किस कदर बढ़ चुकी है, इसका वास्तविक वर्णन लेखक ने किया है।"[1] साथ ही आधुनिक नौकरी पेशा नारी की यौन कुण्ठा का चित्रण भी हुआ है।

इस उपन्यास में समाज तथा कार्यालयीन कामकाज के वास्तविक अंकन के साथ जीवन की भयावहता, लालफितशाही का खोखलापन, मानवीय विडम्बना, विषमता की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही इस उपन्यास में पात्रों की मनोवृत्तियों का सजीव उद्घाटन हुआ है।

1.3.1.3 यात्राएँ :

'यात्राएँ' गिरिराज किशोर का तृतीय लघु उपन्यास है। इसका प्रकाशन **1971** ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। यह एक आत्मकथनात्मक शैली

---

1. बलराज सिंहमार - मानवमूल्य और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास - पृष्ठ -202-203

में लिखा मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें नवविवाहित दाम्पत्य जीवन की यातनामयी अंतरंग यात्रा को प्रस्तुत किया है। नवविवाहित पति-पत्नी की सुहागरात से शुरू हुई यह यात्रा एक दूसरे को समझने की कोशिश में बिताए गए चंद दिनों की कहानी है जो विवाह के बाद कुछ दिनों में ही घटित होती है। लेखक ने 'मैं' और 'वन्या' के माध्यम से नवविवाहित दाम्पत्य जीवन की समस्याओं के साथ दो भिन्न मानसिक स्थितियों को समझाने का प्रयास किया है। उपन्यास का उद्देश्य नवविवाहित दाम्पत्य के प्रारंभिक वैवाहिक जीवन के अनुभव तथा यौन संबंधों को उजागर कराना है।

1.3.1.4 जुगलबंदी :

'जुगलबंदी' **1973** ई. में प्रकाशित हुआ गिरिराज का चौथा उपन्यास है। जिसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इसका कथानक द्वितीय विश्वयुद्ध के कुछ वर्षों से लेकर देश की आजादी के पूर्व तक का कालखण्ड है। इस अवधी में भारतीय सामंती वर्ग की नियति, मानसिकता एवं तत्कालीन संस्कृति का यथार्थ ता से अंकन हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास का कथानक 'लोग' उपन्यास की अगली कड़ी है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए अंग्रेजों के 'वारफण्ड' को अपने पास पैसे न होते हुए भी अंग्रेज भक्ति के कारण शिवचरण बाबू पैसों का इंतजाम करना चाहते है। इस प्रयास में उनका बेटा शारीरिक और दिमागी तौर पर पंगू बनता है। पैसा न देने से शिवचरण बाबू को कड़ी निगरानी में रखा जाता है। बहू के गहने लेकर उन्हें छोड़ दिया जाता है। युद्ध में अंग्रेजों की जीत की खुशी में शिवचरण बाबू शराब पीते है। रायफल से आसमान में फायर करते है। इस धमाके से बहू का गर्भ पेट में उलट जाता है और विकलांग बच्चा पैदा होता है, जो इस विकलांग पीढ़ी की प्रतीकात्मकता को दर्शाता है। आजादी नजदीक आती है। अंग्रेज यहाँ से जा रहे हैं किन्तु शिवचरण बाबू इस स्वतंत्रता को अर्थहीन मानते है। वे एकदम अलग हो जाते है। इस बदलते राजनीतिक वातावरण में मेल न खाने से वे खुदखुशी करते है।

1.3.1.5 दो :

गिरिराज किशोर का 'दो' यह पाचवाँ उपन्यास है। यह उपन्यास लघु उपन्यासों की श्रेणी में आता है। जिसका प्रकाशन 1974 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। यह किशोर का पहला नायिका प्रधान उपन्यास है जो नारी जीवन की विविधता से जुड़ा है। पुरुष-प्रधान संस्कृति में नारी जीवन की दयनीयता का अंकन करते हुए उसके अस्तित्व और संघर्ष पर 'दो' में प्रकाश डाला है। 'दो' में नायिका नीमा के जीवनसंघर्ष का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। नीमा की कथा अतृप्त एवं संघर्षरत, पीड़ित पत्नी की कथा है। इसमें पहले पति पुजारी की आक्रमक, हिंसक प्रवृत्ति और दूसरे पति पण्डित जी की सहृदयता, सहिष्णुता के बीच फँसी नीमा के अन्तर्दवंद्व का चित्रण यथार्थता से हुआ है।

1.3.1.6 इंद्रसुने :

गिरिराज किशोर का छठा उपन्यास है - इंद्रसुने। जिसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1978 ई. में हुआ है। इसमें देश का ग्रामीण जीवन एवं कृषि व्यवस्था को किस तरह विघटित या नष्ट किया जा रहा है इसका वास्तविक चित्रण किया है।

इंद्रसुने यह फैन्टेसी शैली में लिखा नायक विहिन उपन्यास है। इसमें लेखक ने तीन प्रतीक चुने हैं। पहला-मृत्युलोक व्यथा, दूसरा-देवलोक कथा तो तीसरा-परलोक कथा। 'मृत्युलोक' में देश के निम्नवर्ग, किसान, मजदूर आदि शोषितों का तो 'देवलोक' में भारतीय पूँजीपति, बुद्धिजीवी एवं पदाधिकारी और 'परलोक' में पाश्चात्य पूँजीवादी शोषकों का चित्रण है। देवलोक वासी परलोक की सहायता से मृत्युलोक वासी अर्थात गरीब किसान, मजदूर आदि का शोषण करते हैं। देवलोक का अन्याय जब मृत्युलोक को असहय होता है तो देवलोक के खिलाफ विद्रोह होता है। मृत्युलोक वासी अपनी जमीन और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्षरत रहते हैं। आज जो सेज (Sepial Economic Zone -विशेष आर्थिक क्षेत्र) के खिलाफ आंदोलन चल रहे

हैं और नंदीग्राम और सिंगूर पश्चिम बंगाल में जो घटित हो रहा है यह 'इंद्रसुने' उपन्यास की प्रासंगिकता को ही अधोरेखित करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

1.3.1.7 दावेदार :

गिरिराज का 'दावेदार' यह लघु उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1979 ई. में नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली हुआ। 'दावेदार' एक प्रकार की रूपक कथा है। इसमें लेखक ने जीवन सत्य की खोज में निकले अनाम चरित्र की जीवनयात्रा को अभिव्यक्त किया है। 'दावेदार' एक आत्मसंघर्ष एवं आत्मपरीक्षण की कसौटी है। "गिरिराज किशोर ने विश्व के मानव मुक्ति के प्रश्न का हल खोजने का प्रयास इस उपन्यास के माध्यम से किया है।"[1] अत: यह स्पष्ट है कि 'दावेदार' मानवीय संवेदना की गहरी तलाश है।

1.3.1.8 तीसरी सत्ता :

'तीसरी सत्ता' गिरिराज किशोर का आठवाँ उपन्यास है जिसका प्रकाशन नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली से 1982 ई. में हुआ है। उपन्यास में त्रिकोणात्मक कथा है जिसमें एक दाम्पत्य के जीवन में बाहरी आदमी के आगमन से आए बदलाव को रेखांकित किया है। भारतीय समाज में नारी आर्थिक आत्मनिर्भर होने के बावजूद भी पुरुषी एकाधिकार की शिकार होती है इसका भी चित्रण किया है।

उपन्यास में डॉ.रमा एवं मदन शर्मा के बीच तीसरी सत्ता के रूप में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी रामेसर के आगमन से शर्मा परिवार में आए बदलाव को यहाँ सूक्ष्मता से अंकित किया है। लेकिन इस संदर्भ में एक स्त्री होने के नाते सारे दु:ख, दर्द, यातनाएँ डॉ.रमा को ही भुगतनी पड़ती है।तीसरी सत्ता नारी मुक्ति को आधार बनाकर लिखा उपन्यास है।

---

1. डॉ.सुरेश सदावर्ते - कथाकार गिरिराज किशोर, पृष्ठ -104

1.3.1.9 यथाप्रस्तावित :

'यथाप्रस्तावित' गिरिराज का **1982** ई में प्रकाशित नौंवा उपन्यास है। जो राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। यह कार्यालयीन जीवन से संबंधित यथार्थवादी उपन्यास है। अछूत समस्या पर आधारित किशोर की यह नवीनतम रचना है जो पत्रशैली में लिखी गई है।

'यथाप्रस्तावित' का बालेसर एक निम्नवर्गीय चमार है जो एक सरकारी कार्यालय में चपरासी है। कहानी बालेसर के पत्रावली पर आधारित है। वह हर बार अपने पत्रों में यथास्थिति को उजागर करता है। नौकरशाही की अमानवीयता के कारण उसके माँ-बाप की तथा दो बच्चों की दवा के अभाव में मृत्यु हो जाती हैं। उसे निलंबित किया जाता है, उसका जीना हराम किया जाता है। इस भयानक स्थितियों से वह अंत तक जूझता रहता है अंततः वह पागल हो जाता है। उसका दोष केवल इतना ही है कि वह दलित एवं अनुसूचित जाति का है और उन लोगों को मिले संवैधानिक अधिकारों का उपयोग करना चाहता है।

गिरिराज किशोर ने इस उपन्यास में भारतीय प्रशासन व्यवस्था की मानसिक विकृतियों का उद्घाटन किया है। साथ ही अपनी गहरी संवेदना का परिचय दिया है।

1.3.1.10 परिशिष्ट :

सन् **1984** में प्रकाशित 'परिशिष्ट' गिरिराज किशोर का दसवाँ उपन्यास है। बारह भागों में विभाजित यह एक बृहद रचना है। सदियों से दलितों के प्रति देखने की जो सवर्ण मानसिकता है उसमें आज भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अनुसूचित जातियों के छात्रों को देश के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थाओं में किस प्रकार अमानवीय प्रवृत्ति का सामना करना पड़ता है, इसका सजीव एवं प्रामाणिक चित्रण 'परिशिष्ट' में हुआ है। यह जातिगत विषमता की भयावह स्थिति को उजागर करनेवाला उपन्यास है।

1.3.1.11 असलाह :

'असलाह' गिरिराज का 1987 ई. में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित ग्यारहवाँ उपन्यास है। इसमें लेखक ने तीसरे विश्वयुद्ध के कगार पर खड़े भयभीत मानव को मुक्त करने का प्रयास कर साम्राज्यवादी देशों की कुटिल राजनीति का पर्दाफाश किया है। असलाह शब्द को लेखक ने अस्त्र-शस्त्र के अर्थ में प्रयुक्त किया है। आज लोग समता, प्रेम, मानवता की अपेक्षा हाथियारों को अधिक चाहते हैं और उसके बल पर दूसरों पर अधिकार जताते हैं। आखिर हाथियारों की दुनिया में जीत मानवता की ही होती है। इस विषय को लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में स्पष्ट किया है।

1.3.1.12 अंतर्ध्वंस :

'अंतर्ध्वंस' किशोर का सन् 1990 में प्रकाशित बारहवाँ उपन्यास है। भारत में शिक्षित होकर विदेश जानेवाले युवकों, वैज्ञानिकों एवं बुद्धिजीवियों की नियति को लेखक ने उजागर किया है। यह पत्रात्मक शैली में लिखा उपन्यास है। उपन्यास का प्रमुख पात्र डॉ.दीपक पचौरी है जिसे अपने देश के प्रति प्यार है। वह डॉक्टरेट के लिए अमरिका जाकर डॉ.सू के प्रोजेक्ट में शामिल होता है और अपने देश, जमीन, परिवार को भूलने लगता है। उसे अपने भविष्य के सामने बीमार बेटे की भी चिंता नहीं होती। इस उपन्यास में लेखक ने यह दिखाया है कि विकसनशील एवं अविकसित देशों के वैज्ञानिकों को विकसित देश अपने यहाँ ले जाकर उनकी प्रतिभा का उपयोग करके उन्हें एक मशीनी पुर्जे में रूपांतरित करते हैं। यही उनकी नियति है।

1.3.1.13 ढाई घर :

'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त 'ढाई घर' किशोर का तेरहवाँ उपन्यास है। जिसका प्रकाशन 1992 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ से हुआ है। स्वतंत्रता के पूर्व से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के कुछ वर्ष तक सामंतीय परिवेश का इसमें चित्रण है। 'ढाईघर', 'जुगलबंदी' उपन्यास परंपरा को आगे बढ़ाता है।

'ढाई घर' की रचना आत्मकथनात्मक शैली में सामंती जीवन को प्रमुखता देकर हुई है। 'ढाई घर' राय परिवार की कहानी है। इसके प्रमुख पात्र हरिराय अंग्रेज भक्त जमींदार है जो अपनी सामंती परंपरा, रौब-दाब, शानौं-शौकत से रहकर आजादी के आंदोलन से दूर रहते है। आजादी के बाद उनके सहयोगी काँग्रेस के साथ होते है लेकिन हरिराय नहीं। परंपरागत सामंती अहंकार के कारण हरिराय बदलते समय के साथ मेल नहीं खाते, वे टूट जाते हैं। नयी व्यवस्था से पराजित होते हैं।

किशोर ने शिक्षा, सुधार आदि से दूर रहनेवाले सामंत लोगों को उसका दुष्परिणाम किस प्रकार सहना पड़ता है इसका रेखांकन 'ढाई घर' में किया है। परिस्थिति के अनुसार अपने आप को बदलने में ही जीवन की सार्थकता है यह तत्व यहाँ स्पष्ट होता है।

1.3.1.14 यातनाघर :

'यातनाघर' 1997 ई. में प्रकाशित गिरिराज का चौदहवाँ उपन्यास है। जिसे भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित किया है। यह अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों के शिल्प एवं विषयवस्तु से भिन्न है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की त्रासदी को 'यातनाघर' में अभिव्यक्त किया है।

'यातनाघर' विवरणात्मक शैली में लिखा तकनीकी अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान से संबंधित उपन्यास है। उपन्यास का केंद्रीय पात्र विष्णु नारायण है जो संस्थान में प्रशासन अधिकारी है। वह प्रशासन, नौकरशाही, अधिकारी और छात्रों के व्यवहारों से हैराण होता है तो पारिवारिक कारणों से त्रस्त। वह इस वातावरण को बदलना चाहता है लेकिन लौटकर वहीं आता है। यातनाग्रस्त होकर अंत तक संघर्ष करना ही उसका जीवन है।

लेखक ने तकनीकी उच्च शिक्षा संस्थानों में काम करते समय प्राप्त अनुभवों को यहाँ अभिव्यक्त किया है। वर्तमान शिक्षा संस्थानों में फैली विसंगतियों को भी प्रकाश में लाने का प्रामाणिक प्रयास लेखक ने किया है।

1.3.1.15 पहला गिरमिटिया :

'पहला गिरमिटिया' गिरिराज किशोर द्वारा लिखित पंद्रहवाँ उपन्यास है। यह महात्मा गांधी जी की दक्षिण आफ्रीकीय जीवन यात्रा पर लिखा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन 1999 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में 'दक्षिण आफ्रीका में गिरमिट या एग्रीमेंट पर गए कुलियों के दर्दनाक जीवन का तथा गांधी जी के दक्षिण आफ्रीकीय संघर्षशील जीवन का चित्रण है। एक सामान्य व्यक्ति से महात्मा तक बनने की जीवन यात्रा को यहाँ अंकित किया है।

'पहला गिरमिटिया' में गांधी जी के महात्मा रूप की अपेक्षा मोहनदास के रूप को प्रमुखता दी है। वह एक सामान्य व्यक्ति के रूप में चित्रित है। गांधी जी एक साल के गिरमिट पर दक्षिण आफ्रीका जाते हैं। वहाँ के भारतीय कुलियों के अमानवीय जीवन को देखकर व्यथित होते हैं और इसके विरोध में गिरमिटियों का प्रखर आंदोलन खड़ा करते हैं। कुलियों पर पाशविक अत्याचार किए जाते हैं उन्हें अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती है। अंत में लंबे संघर्ष के बाद उन्हें सफलता मिलती है। गिरमिटियों के लिए संघर्ष करके उन्हें न्याय दिलानेवाला वह 'पहला गिरमिटिया' होता है। एक सामान्य व्यक्ति अपनें प्रयासों से असामान्य कैसे बनता है यह उपन्यास में परिलक्षित हुआ है।

1.3.1.16 गिरमिटिया गाँधी :

गिरिराज किशोर का 'गिरमिटिया गाँधी' सन् 2001 में वाणी प्रकाशन, दारियागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित सोलहवाँ उपन्यास है। किशोर का 'पहला गिरमिटिया' महात्मा गांधी जी के दक्षिण आफ्रीकीय जीवन पर आधारित बृहत्काय उपन्यास है। 'गिरमिटिया गाँधी' उनके इसी उपन्यास का संक्षिप्त रूप है। इसी संदर्भ में किशोर ने कहा है - "युवा वर्ग और छात्र इस उपन्यास को पढ़ सके तो हमारे लिए यह सुखद होगा। इसी बात को ध्यान में रखकर दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की पूर्व अध्यक्षा एवं विदुषी प्रो.निर्मला जैन ने 'पहला गिरमिटिया' के

...AR. BA... ...KAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

कुछ अंशो को संयोजित करके इसका संक्षिप्तीकरण किया है।"[1]

आज के गतिमान युग में पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। ऐसे समय में बृहत्‌काय कृतियों का पढ़ने तो न के बराबर है। इस अवकाश की क्षति पूर्ति हेतु 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के विस्तारित प्रसंगों को हटाकर तथा आवश्यक अंशों को जोड़कर 'गिरमिटिया गाँधी' इस उपन्यास का प्रकाशन किया है। इसका उद्देश्य यही है कि गांधी जी और उनके जीवन एवं कार्य के बारे में लोगों को जानकारी हो। अब यह उपन्यास समाज के सभी स्तर के लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है।

1.3.2 कहानी :

सातवे दशक के हिंदी कहानिकारों में गिरिराज किशोर ने अपना अलग स्थान बनाया है।उन्होंने समाज का सूक्ष्म निरीक्षण करके गहराई के साथ अपनी कहानियों में चित्रित किया है। गिरिराज किशोर की कहानियों में समाज के प्रत्येक वर्ग का वर्णन दिखाई देता है। उन्होंने समाज में जो देखा उसी को अपनी कलम द्‌वारा अभिव्यक्ति दी है।

अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन की समस्याओं को उन्होंने वाणी दी है। उनकी कहानियों का मुख्य स्वर संघर्ष का है जो आज का आम आदमी जीवन में भोग रहा है। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि विविध विषयों से संबंधित कहानियाँ लिखकर कहानी क्षेत्र में नए-नए आयाम प्रस्तुत किए हैं। अनुभवों की सच्चाई तथा संवेदनशीलता उनकी कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

1.3.2.1 नीम के फूल :

'नीम के फूल' गिरिराज का पहला कहानी संग्रह है। जिसका प्रकाशन किताब महल,इलाहाबाद से **1964** ई.में हुआ था। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण करनेवाली है। इसमें कुल **19** कहानियाँ संग्रहित हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - गिरमिटिया गाँधी, पृष्ठ -5

1.3.2.2 पेपरवेट :

गिरिराज किशोर के 'पेपरवेट' कहानी संग्रह का प्रकाशन 1967 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इस संग्रह में लेखक ने समसामयिक भ्रष्ट राजनीतिक परिवेश का पर्दापाश किया है। साथ ही उच्च मध्यवर्गीय परिवार की कुण्ठा, संत्रास तथा सामाजिक विषमता से घीरे व्यक्ति की मानसिकता को उजागर किया है। साथ ही स्त्री-पुरुष संबंधों को भी उजागर किया है। इस कहानी संग्रह में कुल 10 कहानियों को संग्रहित किया है।

1.3.2.3 रिश्ता और अन्य कहानियाँ :

गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'रिश्ता और अन्य कहानियाँ' संग्रह का प्रकाशन 1968 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ बदलते मानव संबंध और टूटते जीवन मूल्यों से संबंधित हैं। प्रस्तुत कहानियाँ मध्यवर्गीय लोगों की मानसिकता को रेखांकित करती है। इस कहानी संग्रह में कुल 10 कहानियाँ संग्रहित हैं।

1.3.2.4 शहर दर शहर -

किशोर के 'शहर दर शहर' कहानी संग्रह का प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से 1976 ई. में हुआ है। शहर में रहते हुए लेखक ने जो देखा-भोगा उसकी प्रामाणिक अभिव्यक्ति इस कहानी संग्रह की है। साथ ही आज की समाज व्यवस्था का यथार्थ चित्रण भी किया है। इस कहानी संग्रह में 07 कहानियाँ संकलित हैं।

1.3.2.5 हम प्यार कर ले :

'हम प्यार कर ले' गिरिराज किशोर द्वारा लिखित कहानी संग्रह है। जिसका प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से 1980 ई. में हुआ है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ जिंदगी की विविधता और टूटते जीवन मूल्यों से संबंधित है। इन

कहानियों में वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का यथार्थ अंकन करने में लेखक सफल रहे हैं। इस संग्रह में 10 कहानियाँ संग्रहित हैं।

1.3.2.6 जगत्तारनी एवं अन्य कहानियाँ :

गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'जगत्तारनी एवं अन्य कहानियाँ' संग्रह का प्रकाशन, संभावना प्रकाशन, मेरठ से 1981 ई. में हुआ है। लेखक खुद कार्यालयीन जीवन से जुड़े रहे है। अत: इस संग्रह की कहानियों में कार्यालयीन वातावरण एवं जीवन को सशक्तता से अभिव्यक्त किया है। पात्रों की मानसिकता स्पष्ट करने के लिए प्रतीकों और संकेतों को आधार स्वरूप लिया है। चूहा, शेर, घोड़ा, साँप, केचुआ, गधा आदि को प्रतीकों के रूप में चित्रित किया हैं।

1.3.2.7 गाना बड़े गुलाम अली खाँ का :

'गाना बड़े गुलाम अली खाँ का' यह गिरिराज किशोर का कहानी संग्रह है। जिसका प्रकाशन 1985 ई. में नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली से हुआ हैं। इस संग्रह में कुल 09 कहानियाँ संकलित हैं। इसमें लेखक ने समाज में फैली बुराइयों का पर्दापाश करने का सफल प्रयास किया है।

1.3.2.8 यह देह किसकी है :

गिरिराज किशोर का 'यह देह किसकी है' कहानी संग्रह 1990 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस कहानीसंग्रह में कुल 20 कहानियाँ संग्रहित हैं। जो बालमनोविज्ञान, स्त्री-पुरुष संबंध, राजनीतिक गतिविधियाँ आदि को सूक्ष्मता से चित्रित करती हैं। 'यह देह किसकी है' यह संग्रह की प्रतिनिधि कहानी है जो फैन्टशी के माध्यम से जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को उद्घाटित करती है।

1.3.2.9 आंद्रे की प्रेमिका तथा अन्य कहानियाँ :

'आंद्रे की प्रेमिका तथा अन्य कहानियाँ' किशोर का सन् 1995 ई में किताबघर, अन्सारी रोड़, नई दिल्ली से प्रकाशित कहानी संग्रह है। इस संग्रह में कुल 19

कहानियाँ संग्रहित हैं। इसमें लेखक ने आम आदमी को केंद्र में रखकर उसकी दमित भावनाओं, आशा-आकांक्षाओं को वाणी दी है। साथ ही राजनीतिक बदलाव, नौकरशाही का खोखलापन तथा सांप्रदायिक समस्याओं को उजागर किया है।

संक्षेप में गिरिराज किशोर ने कहानी संग्रहों के माध्यम से समाज जीवन से जुड़े अनेक प्रश्नों को सफलतापूर्वक उजागर किया है।

1.3.3 नाटक :

हिंदी साहित्य में एक सजग कथाकार होने के साथ-साथ गिरिराज किशोर प्रसिद्ध नाटककार भी है। आज तक उन्होंने सात नाटकों का सृजन किया है। इनके नाटकों का कथानक काफी सफल रहा है। समकालीन समाज, राजनीति एवं प्रशासन इनके नाटकों के मुख्य विषय रहें हैं। उन्होंने हिंदी नाट्य क्षेत्र में नए-नए आयाम प्रस्तुत किए हैं। किशोर के नाट्य साहित्य के बारे में गिरिश रस्तोगी का मंतव्य हैं - "प्रतीकात्मकता, सांकेतिकता, सामाजिक-राजनीतिक विद्रुपताएँ, तीखापन और दृष्टि का पैनापन उनके नाटककार के रूप में भी है। वैसे नाटकों में सामाजिक अंतर्विरोधों, विद्रुपताओं की अपेक्षा उन्होंने राजनीतिक विरोधाभास को अधिक आँका है। वर्तमान व्यवस्था और उस व्यवस्था के बीच आदमी की स्थिति को उनका हर नाटक चित्रित करता है।"[1] गिरिराज किशोर के नाटकों का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है -

1.3.3.1 नरमेध :

'नरमेध' गिरिराज किशोर का मनोवैज्ञानिक नाटक है।इसमें जीवन की उलझनों और पारिवारिक कुंठित मानसिकता के चित्रण के साथ स्त्री-पुरुषों के गहरे और उलझे हुए रिश्तों को विश्लेषित किया है।

इस नाटक की नायिका 'तारा' है जो अपने पति इंद्रराव से असंतुष्ट है। साथ ही पूर्व प्रेमी नरेन के साथ बिताए गए क्षणों की स्मृति में जीति रहती है।इंद्रराव की

---

1 डॉ.गिरिश रस्तोगी – समकालीन नाटककार, पृ.78, 79

तारा के सामने एक नहीं चलती। घर के घुटनभरे वातावरण का प्रभाव उनके छोटे बेटे अंकन पर होता है। नरेन की बेटी बंती तारा के बेटे रंजन से शादी करना चाहती है लेकिन तारा यह नहीं होने देती। इस नाटक का अंत तारा की बिघड़ी मानसिकता से होता है। इस नाटक में तारा के माध्यम से विवाहित नारी की कुंठाग्रस्त मनोदशा का परिचय मिलता है।

1.3.3.2 प्रजा ही रहने दो :

गिरिराज किशोर का 'प्रजा ही रहने दो' यह नाटक राजनीति से संबंधित है। पौराणिक संदर्भ के माध्यम से आज की भ्रष्ट राजनीति का दर्शन प्रस्तुत नाटक में होता है। इसमें महाभारत की पृष्ठभूमि को आज की राजनीतिक परिस्थितियों में सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया है। अंधे धृतराष्ट्र और अंधी बनी गांधारी के अंधे प्रशासन और सिंहासन की अंधी लालसा महाभारत के महाविनाश के साथ समाप्त हुई होगी, ऐसी बात नहीं। आज भी आँखे खुली होने के बावजूद भी उसी प्रकार की लालसा के कहीं रूप हमें आज की राजनीति में भी दिखाई देते हैं। साथ ही द्रौपदी को लेखक ने जनता की पीड़ा का प्रतीक दर्शाया है। 'प्रजा ही रहने दो' में गिरिराज किशोर ने महाभारतकालीन पौराणिक कथा को आज के युगीन संदर्भ में प्रस्तुत किया है।सत्ता, कुर्सी के संघर्ष की ओर संकेत किया है। समकालीन परिस्थिति को ध्यान में रखकर राजनीति पर व्यंग्य किया है।

1.3.3.3 घास और घोड़ा :

'घास और घोड़ा' गिरिराज किशोर का सामाजिक विषयवस्तु से संबंधित संघर्ष प्रधान नाटक है। डॉ.सुरेश साळुंके ने लिखा है - "वर्तमान लेखकों की समस्याओं एवं सम-सामायिक संदर्भो पर लेखक कुछ लिखना चाहते हैं परंतु अपनी बैचेनी एवं मानसिक असंतुलन के कारण लिख नहीं पाते, इससे इस नाटक का प्रारंभ होता है।"[1] इसमें वर्तमानकालीन समाज व्यवस्था, न्याय व्यवस्था और शासन व्यवस्था पर व्यंग्य करके उच्च वर्ग और निम्न वर्ग में संघर्ष दिखाया है। एक धनिक पिता पैसा एवं उपरी

पहुँच के बल पर अपने खूनी पुत्र को अदालत से निर्दोष साबित कराने में सफल होता है। साथ ही नाटककार ने लेखक, निर्देशक, रंगकर्मी और दर्शकों की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों को समझाने का प्रयास किया है।

1.3.3.4 चेहरे-चेहरे किसके चेहरे :

गिरिराज किशोर ने 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' में वर्तमानकालीन राजनीति के चित्रण के साथ ही आम जनता की करुणा, मानवीय संवेदना एवं उनकी समस्याओं को अभिव्यक्त किया है। इस नाटक में केवल एक, दो, तीन, चार जैसे बिना नाम, रूपरेखा, वेशभूषा, संकेत की भूमिकाएँ निभानेवाले पात्र है। इनके बीच ढोंगी राजनीति की चर्चा होती है। इस नाटक में सभी पात्रों ने मुखौटे पहने हैं। ये हमेशा जनता की कल्याण की अपेक्षा राजनीतिक स्वार्थ की चर्चा करते है। इन पात्रों के बीच आपस में सत्ता एवं कुर्सी को लेकर संघर्ष है। बाद में आम आदमी की पहचान गुम हो जाती है, मुखौटों की ही पहचान होती है। इस प्रकार पूरे नाटक में लेखक ने अपनी बात प्रकट करने के लिए संकेत, प्रतीक, बिम्बों से काम लिया है।

1.3.3.5 केवल मेरा नाम लो :

'केवल मेरा नाम लो' गिरिराज किशोर का मनोविज्ञान से संबंधित नाटक है। इसमें एक नौकरीपेशा व्यक्ति के मनोविज्ञान का चित्रण है। वह बाह्य जीवन में एक कर्मठ, ईमानदार, समाजशील व्यक्ति है पर भावात्मक स्तर परावलंबी है। उसे किसी-ना-किसी का सहारा चाहिए। पहले माँ और बाद में पत्नी के न रहने पर वह अपनी अधिकार भावना को बेटी सुलभा पर थोपता है। धीरे-धीरे उसकी भावनाएँ मानसिक असंतुलन में बदल जाती है। वह सुलभा को अपनी बेटी के नजर से न देखकर पत्नी की नजर से देखता है। वह बेटी के साथ यौन संबंध स्थापित करना चाहता है और विरोध होने पर उसे मौत के घाट उतार देता है। इस प्रकार गिरिराज किशोर ने आज के समाज में लोगों की बदलती मानसिकता को स्पष्ट किया है।

---

1 डॉ.सुरेश साळुंखे – गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य : एक अनुशीलन, पृ.52

1.3.3.6 जुर्म आयद :

'जुर्म आयद' यह गिरिराज किशोर का लघुनाटक है। इसमें एक अशिक्षित नारी की समस्याओं को रेखांकित किया है। महिला समाज के दुख को उजागर करने के साथ न्याय व्यवस्था की दोषपूर्णता पर भी प्रकाश डाला है। नाटक का प्रमुख पात्र उम्मेदी का पति उसके चरित्र पर आशंका व्यक्त करता है। इसलिए वह अपनी बेटी के साथ नदी में कूद जाती है।उसकी बेटी की मृत्यु हो जाती है लेकिन वह बच जाती है। उसके बाद पुलिस की हिरासत में दस साल उसपर मनमाने अत्याचार होते है। वह न्याय व्यवस्था का दरवाजा खटखटाती है। अदालत के फैसले से पूर्व ही उसकी मौत हो जाती है। संबंधित जज की पुत्री की भी यही हालत हुई है लेकिन वह कुछ नहीं कर सकते। अत: यह नाटक आज की न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करता है।

सदियों से नारी जाति के प्रति समाज का दूषित दृष्टिकोण आज भी नहीं बदला है। यह नाटक हमें सोचने पर मजबूर करता है कि समाज की सहानुभूति आज किसके साथ है?

1.3.4 एकांकी :

1.3.4.1 बादशाह-गुलाम-बेगम :

गिरिराज किशोर का पहला एकांकी संग्रह है - 'बादशाह-गुलाम-बेगम'। जिसका प्रकाशन 1975 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें वर्तमानकालीन राजनेताओं की स्वार्थी, भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति, सरकारी कार्यालयों की अकर्मण्यता, आम आदमी की मूल्यहीनता के साथ जीवन की विसंगतियों को स्पष्ट किया है।

1.3.4.2 रंगार्पण :

'रंगार्पण' यह गिरिराज का दूसरा एकांकी संग्रह हैं। जिसका प्रकाशन आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली दवारा 1980 ई. में हुआ है।

1.3.5 निबंध :

गिरिराज किशोर एक प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार होने के साथ-साथ एक सफल निबंधकार भी हैं। उन्होंने अनेक विषयों पर निबंधों की रचना की है। उनके निबंधों में गहरी चिंतनशीलता एवं पैनी दृष्टि का परिचय मिलता है। अब तक उनके छह निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

1.3.5.1 संवाद सेतु :

'संवाद सेतु' गिरिराज किशोर का पहला निबंध संग्रह है। जिसका प्रकाशन 1983 ई. में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली से हुआ है। इसके प्रथम भाग में शैलेश मटियानी, अमरकांत और राजेंद्र यादव जैसे साहित्यकारों के व्यक्तिगत जीवन और लेखन कार्य पर आलोचनात्मक आलेख लिखे हैं। तो दूसरे भाग में उनके रचनात्मक एवं आलोचनात्मक आलेख संग्रहित हैं।

1.3.5.2 लिखने का तर्क :

गिरिराज किशोर का दूसरा निबंध संग्रह है - 'लिखने का तर्क'। जिसका प्रकाशन 1991 ई. में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें पंद्रह निबंधों को संग्रहित किया है। इन निबंधों में साहित्यिक समस्याओं का सामना करनेवाले साहित्यकार की सच्ची तस्वीर खिंची है। साथ ही किशोर ने अपने रचना कार्य की खोज करके उससे प्राप्त तथ्यों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुति की हैं।

1.3.5.3 कथ-अकथ :

'कथ-अकथ' गिरिराज किशोर का तीसरा निबंध संग्रह है। जिसका प्रकाशन, वाणी प्रकाशन, दारियागंज, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें ग्यारह निबंधों को विविध लेखकों के प्रसिद्ध पुस्तकों से संग्रहित किया है।

1.3.5.4 सरोकार -

गिरिराज किशोर के 'सरोकार' निबंध संग्रह का प्रकाशन 1992 ई. में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली से हुआ है। इस संग्रह में गिरिराज किशोर के

समय-समय पर लिखे निबंधों का संग्रह है। यह निबंध विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित है।

1.3.5.5 एक जनभाषा की त्रासदी :

'एक जनभाषा की त्रासदी' गिरिराज किशोर द्वारा लिखित निबंध संग्रह का प्रकाशन 1993 ई. में राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इस संग्रह में हिंदी भाषा के साथ अन्य भारतीय भाषाओं के प्रश्नों को न्याय दिया है। भाषा के खिलाफ हो रहे पक्षपात को लेखक ने स्पष्ट किया है। यह भाषा-संबंधी बीस आलोचनात्मक लेखों का संग्रह है।

1.3.5.6 जन-जन-जनसत्ता -

गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'जन-जन-जनसत्ता' निबंध संग्रह में 1982 ई. से 2002 ई. तक छपे निबंधों का संकलन किया है। यह निबंध सामाजिक, वैचारिक, साहित्यिक भाषा से संबंधित होने के साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों से संबंधित है।

1.3.6 संस्मरण एवं डायरी :

1.3.6.1 सप्तपर्णी :

गिरिराज किशोर का पहला संस्मरण है - सप्तपर्णी। जिसका प्रकाशन 1994 ई. में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। यह संस्मरण चार प्रमुख शीर्षकों तथा कुछ उपशीर्षकों में विभाजित है। इसके पहले शीर्षक 'आत्मतर्पन' में लेखक ने अपने परिवेश तथा कानपुर आई.आई.टी.से संबंधित दोस्तों के बारे में संस्मरण दिये है। दूसरा शीर्षक 'सहयात्री-आत्मसंस्मरणात्मक नोटस्' में लेखक ने अपने वरिष्ठ एवं समकालीन साहित्यकारों के साथ बीते हुए समय को रेखांकित किया है। तीसरा शीर्षक 'व्यक्ति और समाज' में प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ स्व.आचार्य जुगल किशोर तथा हिंदी सेवी श्री भक्त दर्शन पर संस्मरणात्मक आलेख लिखे हैं।अंतिम शीर्षक में 1965 ई. के 'युद्ध की गैर सैनिक

डायरी' 06 सितंबर से 01 अक्तुबर तक है। इसमें लेखक के संपर्क में आए लोगों के अनुभवों के संस्मरण हैं। उस युद्ध के कारण लेखक के मन मस्तिष्क पर पड़े प्रभाव को उन्होंने डायरी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

1.3.7 बालसाहित्य :

1.3.7.1 बच्चों के निराला

1.3.7.2 सोने की गुड़िया

1.3.7.3 पके सोने के पेड़

संस्कार स्वरूप प्रस्तुत साहित्य में मनोरंजन के साथ कुछ नए विचार भी दिए हैं।

1.3.8 अन्य साहित्य :

गिरिराज किशोर ने हिंदी पत्रिका 'निरंतर' का दस साल तक संपादन कार्य किया है। 'नवभारत टाईम्स', 'जनसत्ता', इंड़िया टुड़े', 'राष्ट्रीय सहारा', हिंदुस्थान दैनिक', 'रविवार', 'परिवर्तन', 'आजकल', 'हंस', 'सबरंग', 'वागर्थ', 'कथादेश', 'राष्ट्रभाषा संदेश', 'सारीका', 'वैचारिकी', 'धर्मयुग', 'प्रकर' आदि पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ एवं लेख आदि का प्रकाशन हुआ है। संप्रति वे कानपुर से प्रकाशित 'अकार' पत्रिका के प्रमुख संपादक है।

1.4 साहित्य की विशेषताएँ :

लेखक अपने आस-पास के परिवेश में जो अनुभव प्राप्त करता है उसकी अभिव्यक्ति अपने साहित्य के द्वारा प्रस्तुत करता है। गिरिराज किशोर का संपूर्ण साहित्य जीवन के किसी-न-किसी पक्ष एवं समस्याओं को उद्घाटित करने में सफल हुआ है। समकालीन हिंदी कथात्मक साहित्य की दिशा निश्चित करने में किशोर का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है।उनके साहित्य की विशेषताएँ निम्नांकित हैं -

1.4.1 सृजन प्रक्रिया का केंद्र - अनुभव :

गिरिराज किशोर ने अपने जीवन जो में देखा, भोगा, सहा और अनुभव

किया उसकी प्रामाणिक अभिव्यक्ति साहित्य में की है। उन्होंने अपनी नौकरी के सेवाकाल में विभिन्न पदों पर काम किया। जीवन में आए अनुभवों को उन्होंने साहित्य द्वारा रेखांकित किया है। उनकी साहित्यिक सृजन प्रक्रिया का केंद्र उनका व्यापक अनुभव विश्व ही रहा है।

1.4.2 अनवरत लेखन कार्य :

गिरिराज किशोर जी ने बचपन से ही लेखन कार्य शुरू किया। उनको अपने जीवन में अनेक कठिन प्रसंगों का सामना करना पड़ा। उनके लेखन शक्ति ने ही उन्हें समाज को पहचानने की कठिन प्रसंगों का सामना करने की ताकद दी। उनका कहना है कि जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक लेखन कार्य करता रहूँगा। अंतिम साँस तक लिखते रहने में ही वह अपने जीवन की सार्थकता मानते है। गिरिराज किशोर ने स्कूली जीवन से ही लिखना आरंभ किया और आज भी लिख रहे है। अपने अनवरत लेखन कार्य से हिंदी जगत् में वे एक शीर्षस्थ रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध है। लिखने को ही उन्होंने अपना धर्म, कर्म और जीवन माना है। बिना लेखन के वे रह भी नहीं सकते हैं। इस प्रकार छठीं कक्षा से शुरू हुई उनकी लेखन यात्रा आज भी जारी है।

1.4.3 संवेदनशील लेखक :

गिरिराज किशोर अपने शैशव काल से ही भावुक एवं संवेदनशील रहे हैं। झूठ से उन्हें नफरत थी। बचपन से ही लेखन का आरंभ करना, हर बात को बारीकी से देखना उनकी संवेदनशीलता का प्रमाण है। वे बचपन से ही गंभीर प्रकृति के रहे हैं। आरक्षण, दलित-शिक्षा, नारी-मुक्ति ऐसे अनेक संवेदनशील विषयों को लेकर उन्होंने उपन्यासों की रचना की है। इसमें 'परिशिष्ट', 'यथाप्रस्तावित', चिड़ियाघर', 'दो', आदि प्रमुख रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। वर्तमान काल में भारतीय समाज की स्थिति को देखे तो आज का माहौल ईमानदार और संवेदनशील लोगों के लिए स्वास्थ्यजनक नहीं है। ऐसे समय में जिन रचनाकारों ने अपने साहित्य द्वारा संवेदनशील विषयों को बहुआयाम दिया है उनमें किशोर का नाम अग्रणी है।

1.4.4 मानवीय दृष्टि:

गिरिराज किशोर के साहित्य से सूक्ष्म मानवीय दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है। उनकी रचनाओं में दलित पीड़ित बहुजन लोगों के प्रति सहानुभूति का रुख अपनाया हुआ है। सालों साल से पीड़ित प्रताड़ित लोगों की व्यथा को अपने साहित्य द्वारा वाणी देने का कार्य उन्होंने किया है। 'परिशिष्ट' उपन्यास के प्रमुख पात्र रामउजागर, अनुकूल हो या 'यथाप्रस्तावित' का बालेसर ऐसे अनेक पात्रों को मानवीय दृष्टि से चित्रित किया है। किशोर के अनुसार सब लोगों को वह किसी भी जात, धर्म, पंथ का हो समान मानवीय अधिकार मिलना जरूरी है। उनकी रचनाओं का सूक्ष्मता से अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि उनकी रचनाएँ मानवीय दृष्टि से संपृक्त हैं। 'असलाह', 'इंद्रसुने', 'अंतर्ध्वंस' आदि उपन्यासों में यह दृष्टि परिलक्षित होती है। अत: विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति ही सब कुछ नहीं है। उसमें मानवीय दृष्टि होना आवश्यक है। इस विचारधारा के दर्शन उनके उपन्यास साहित्य में उजागर होते है।

1.4.5 प्रयोगशीलता :

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में गिरिराज ने अपनी अलग पहचान बनायी है। अनेक अछुते विषयों पर उन्होंने निरंतर लेखन कार्य किया है। उनके उपन्यास, कहानी एवं नाटक के कथ्य, शिल्प, परिवेश और भाषा विशिष्ट एवं प्रयोगधर्मी मानी जाती है। उनके पास निरीक्षण शक्ति और व्यापक अनुभवों का भंडार हैं। अपने जीवन में उन्होंने विविध पदों पर काम किया। जीवनयापन से संबंधित आए अनेक अनुभवों को उन्होंने अपने साहित्य में चित्रित किया है। इस दृष्टि से उनके समग्र साहित्य का कथ्य महत्त्वपूर्ण है। किशोर के साहित्य के विषय और संवेदना उनकी प्रयोगशीलता का उदाहरण है। 'अंतर्ध्वंस' के प्रकाशकीय वक्तव्य के अनुसार - "उनकी यह विशेषता है कि वे निरंतर विषयवस्तु, भाषा और संवेदना के स्तर पर नए-नए प्रयोग करते रहते हैं। ऐसे प्रयोग नहीं जो अपरिपक्व हों बल्कि ऐसे जो संवदेना और अनुभूति को समृद्ध करते

हैं।"[1] अपनी प्रयोगशीलता के कारण समकालीन कथाकारों में किशोर की विशिष्ट पहचान बन गई है।

1.4.6 सामाजिक दायित्व बोध :

एक ओर भारत विश्व में एक महासत्ता के रूप में पहचाना जा रहा है। तो दूसरी ओर अस्पृश्यता एवं छुआछूत जैसी प्रथाओं के कारण कलंकित भी है। महात्मा फुले, महात्मा गांधी, डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर आदि महामानवों ने दलितों-पीड़ितों के लिए तथा उन्हें समाज जीवन के प्रवाह में लाने के लिए भरसक प्रयास किए। डॉ.आंबेड़कर जी ने दलितों, पिछड़ी जातियों को शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश, नौकरियों में आरक्षण तथा संसद, विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व देने के लिए आरक्षण की सुविधा निश्चित की। लेकिन आरक्षण के प्रावधान के कारण खुद को ऊँची जाति के समझने वाले सवर्णो के मन में दलितों के प्रति घृणा और क्रोध की अभिव्यक्ति हुई। 'यथाप्रस्तावित' और 'परिशिष्ट' जैसे उपन्यासों में इसी भयानक मानसिकता पर गिरिराज किशोर ने प्रकाश डाला है। ऐसे संवेदनशील विषयों पर उपन्यासों का सृजन करके उन्होंने अपने सामाजिक दायित्व बोध को आधोरेखित किया है। अत: स्पष्ट है कि किशोर मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने के पक्ष में है।

1.4.7 बहुआयामी लेखन :

अपने साहित्यिक जीवन में गिरिराज किशोर किसी साहित्यिक दल, गुट या आंदोलन से संबंधित नहीं रहे।उन्होंने अपने लेखन और प्रतिभा के बल पर ही अपनी अलग पहचान बनाई है। अनेक अछूते विषयों को पहली बार लोगों के सामने प्रस्तुत करने का कार्य गिरिराज किशोर ने बखूबी से किया है।उसमें आरक्षण, अस्त्र-शस्त्र, प्रौद्योगिकी, तकनीकी, युद्ध के विध्वंसकारी रूप, भारतीय कुलियों का दक्षिण अफ्रीका में अमानवीय जीवन,अंग्रेज परस्त सामंतों की विचित्र एवं विघटित मानसिक स्थितियाँ जैसे

---

1. गिरिराज किशोर - अंतर्ध्वंस (प्रकाशकीय वक्तव्य से...)

विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि उनके साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियाँ और अन्तर्विरोध स्पष्टता से परिलक्षित हुआ है। आज के जीवन को उसकी समस्त विविधताओं के साथ सफलता से अभिव्यक्त करने का प्रयास गिरिराज ने अपने साहित्य द्वारा किया है।

1.4.8 नारी-मुक्ति के समर्थक :

भारतीय समाज में एक ओर नारी को देवता माना जाता है तो दूसरी ओर उसे परंपरागत पुरुषी मानसिकता की शिकार होना पड़ता है। पुरुष नारी पर अपना अधिकार जमाए रखना चाहता है। अधिकतर महिलाओं को न कोई स्वातंत्र्य है न अधिकार। अत: सदियों से नारी को केवल भोग तथा बच्चों को पैदा करनेवाली वस्तु के रूप में स्वीकारा गया है। स्वतंत्रता के आंदोलन काल में समाजसुधारक एवं राजनीतिज्ञों ने नारी सुधार की ओर ध्यान दिया। सती प्रथा के उन्मुलन के साथ-साथ नारी की सामाजिक मुक्ति का पर्व शुरू हुआ। आजादी के बाद बदलती जीवनशैली, बदलते जीवनमूल्य, शिक्षा व्यवस्था से नारी की मन:स्थिति में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। परिणामत: आजादी ने व्यक्तिवाद को जन्म दिया। नारी ने अपने अस्तित्व की पहचान शुरू की। वह आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने लगी। वह घर से बाहर आयी लेकिन यहाँ भी परंपरागत पुरुषी मानसिकता उसे शक की दृष्टि से देख रही है।

वर्तमानकालीन हिंदी साहित्यिक नारी की वास्तविक स्थिति का अंकन कर उसकी तरफ देखने का समाज का पारंपरिक दृष्टिकोण बदलना चाहते है। गिरिराज किशोर ने अपने 'दो', 'चिड़ियाघर', 'तीसरी सत्ता' जैसे उपन्यासों में नारी मुक्ति को विशेष महत्त्व दिया है। उनके 'ढाई घर' की सोना अपने स्वतंत्र्य व्यक्तित्व के अनुसार खुद निर्णय लेना चाहती है। 'दो' की नीमा पहले निर्दयी पति को छोड़कर दूसरे सहृदयी पति के पास रहती है। 'चिड़ियाघर' की रिजवी के विचार सामाजिक व्यवस्था को तोड़ देते हैं। 'परिशिष्ट' की नीलिम्मा नारी स्वतंत्र्यता की समर्थक है। अत: यह स्पष्ट है कि समकालीन जीवन में शिक्षा के कारण नारी जीवन में आए बदलाओं को समग्रता से

अभिव्यक्त करने का कार्य लेखक करता है। लेखक नारी को स्वतंत्रता के साथ उसके अस्तित्व को एक विशिष्ट स्थान देने के पक्ष में हैं। अत: वे नारी मुक्ति के समर्थक हैं।

1.5 अनूदित रचनाएँ :

गिरिराज किशोर के साहित्य का फरचम अपने देश की सीमा लाँघकर विदेशों में भी लहराया है।उनका साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं के साथ विदेशी भाषाओं में भी अनूदित होकर संकलनों में समाविष्ट हुआ है। वह है -

1.5.1 अनूदित उपन्यास :

1. 'यथाप्रस्तावित' एवं 'असलाह' कन्नड़ भाषा में अनूदित और प्रकाशित।
2. 'ढाई घर' का पंजाबी कवि डॉ.हरभजन सिंह द्वारा पंजाबी में अनुवाद।
3. 'ढाई घर' का प्रो.पी.पी. साह द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद।
4. 'पहला गिरमिटिया' का मराठी अनुवाद।
5. 'यात्राएँ' उपन्यास पर विश्लेषणात्मक पुस्तक का लेखन हॉलैंड के डॉ.थियो लीड़न विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित।

1.5.2 अनूदित कहानियाँ :

1. 'ए डेथ इन डेल ही' पेग्विन से प्रकाशित कहानी संग्रह में 'रिलेशनशीप' कहानी का संकलन।
2. डॉ.लोठार लुत्से द्वारा संपादित जर्मन भाषा में अनुदित कहानियों के संग्रह में 'अलग अलग कद के आदमी' कहानी दर्ज।
3. फ्रेंच भाषा में प्रकाशित संग्रह में एक कहानी।
4. अंग्रेजी तथा बंगला में कई कहानियों के अनुवाद।
5. अनेक विदेशी भाषाओं में प्रकाशित संग्रहों में कहानियों का संकलन हुआ है।
7. प्रभाकर माचवे एवं श्रवणकुमार द्वारा अंग्रेजी में अनूदित और संपादित संग्रह में "हिंदी शॉर्ट स्टोरी" में 'पेपरवेट' कहानी सम्मिलित।

1.6 विदेश यात्राएँ एवं सहयोग :

1.6.1 विदेश यात्राएँ :

1.6.1.1 1966 ई. में 14 वीं युरोपियन साउथ एशिया कान्फ्रेस कोपनहेगन में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया है।

1.6.1.2 1966 ई. में लंदन, जर्मनी की यात्राएँ की।

1.6.1.3 1995 ई. में महात्मा गांधी के दक्षिण आफ्रीकीय जीवन पर लिखे उपन्यास के दौरान लेखक ने दक्षिण अफ्रीका, इग्लैंड, मॉरिशस आदि देशों की यात्राएँ की।

1.6.1.4 1996 ई. में पाँचवे विश्व हिंदी सम्मलेन में भारतीय सांस्कृतिक मंडल के सदस्य के रूप में त्रिनीदाद में सहयोग।

1.6.1.5 साहित्य अकादमी द्वारा इटली भेजे गए डेनमार्क में आयोजित 14 वें दक्षिण युरोपिन सम्मेलन में सहयोग।

1.6.1.6 अक्तूबर, 2004 ई. में भारतीय लेखक शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में चीन, शांघाय और बीजिंग शहर की यात्रा।

1.6.1.7 फरवरी, 2005 ई. में पाकिस्तान के लाहोर और इस्लामाबाद की भारतीय लेखक शिष्टमंडल के साथ यात्रा।

1.6.2 विशेष सहयोग :

1.6.2.1 1972-73 में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित भारतीय भाषाओं के लेखकों के राष्ट्रीय शिबिरों में हिंदी का प्रतिनिधित्व।

1.6.2.2 स्व.अज्ञेय के नेतृत्व में राम जानकी यात्रा संपादित की है।

1.6.2.3 वत्सल निधि द्वारा आयोजित लखनऊ, वृन्दावन एवं जबलपुर में लेखकीय शिबिर में सहयोग।

1.6.2.4 साहित्य अकादमी हिंदी सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में काम।

1.6.2.5 एन.बी.टी. दिल्ली की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य।

1.6.2.6 इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा रचनात्मक लेखन केंद्र की पाठ्यक्रम समिति द्वारा बनाए गए पाठ्यक्रम का संपादन।

1.7 पुरस्कार एवं सम्मान :

बीसवीं सदी के हिंदी साहित्य को अपनी कलम से समृद्ध करनेवाले रचनाकारों में गिरिराज किशोर का अमूल्य योगदान रहा हैं।उनका साहित्य वैविध्यपूर्ण एवं बहुआयामी है।निरंतर लेखन कार्य से जुड़े किशोर को आज तक अनेक पुरस्कार एवं सम्मानों से गौरवान्वित किया गया है।

1.7.1 उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'भारतेंदु पुरस्कार' 'चेहरे चेहरे किसे चेहरे' नाटक पर।

1.7.2 मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य परिषद द्वारा 'वीरसिंह देव अखिल भारतीय सम्मान' 'परिशिष्ट' उपन्यास पर।

1.7.3 उत्तर प्रदेश हिंदी सम्मेलन द्वारा 'वासुदेव सिंह स्वर्ण पदक'।

1.7.4 उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान।

1.7.5 उत्तर प्रदेश हिंदी सम्मेलन द्वारा भगवती प्रसाद वाजपेयी शताब्दी सम्मान प्राप्त।

1.7.6 क्रैंब्रिज इंग्लैंड द्वारा इंटरनेशनल ऑडर ऑफ मेरिट गोल्ड मेड़ल।

1.7.7 1992 ई. का साहित्य अकादमी पुरस्कार 'ढाई घर' उपन्यास के लिए।

1.7.8 भारतीय भाषा परिषद द्वारा हिंदी लेखन के लिए 1999-2000 ई. को 'राष्ट्रीय शतदल' से सम्मानित।

1.7.9 1998-99 ई. में भारतीय संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एमेरिटस प्रोफेसर के रूप में सम्मानित।

1.7.10 मई, 1999 ई. से नवंबर, 2000 ई. तक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में फैलो के रूप में नियुक्त।

1.7.11 के.के.बिड़ला फौंड़ेशन का 2000 ई. का 'व्यास सम्मान' 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के लिए।

1.7.12 दिसंबर, 2001 ई. में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'गांधी सम्मान'

1.7.13 छत्रपति शाहू महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर की ओर से 28 जनवरी, 2002 ई को 'डी.लिट्' की मानद उपाधि से विभूषित।

1.7.14 भारत सरकार की तरफ से 2007 ई. का पद्मश्री पुरस्कार - साहित्य और शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए।

निष्कर्ष :

गिरिराज किशोर के व्यक्ति और साहित्य रूप को देखने से यह परिलक्षित होता है कि - आधुनिक हिंदी साहित्य को अपने कलम से समृद्ध करनेवाले साहित्यकारों में गिरिराज किशोर का नाम अग्रणी है। उनकी डेढ़ साल की छोटी सी उम्र में ही माताजी का देहावसान हो गया। वे मातृस्नेह से वंचित रहें। उनका लालन-पालन उनके दादाजी ने किया। उनके लेखन के पीछे मातृविहीन होना भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है। उनके परिवार से हिंदी भाषा का साहित्य पढ़ने को प्रखर विरोध हुआ।लेकिन उन्होंने हिंदी पढ़ने-लिखने का शौक नहीं छोड़ा। उनका लेखनकार्य शरतबाबू, प्रेमचंद, प्रसाद, अज्ञेय, जैनेंद्र आदि का साहित्य पढ़ते-पढ़ते प्रारंभ हो गया।

किशोर ने बचपन से ही लिखना प्रारंभ किया। जीवन के कठिन समय में भी उनका लेखन कार्य जारी रहा। छठीं क्लास से शुरू हुई उनकी लेखन यात्रा जीवन के कठीन प्रसंगों में भी चलती रहीं। किशोर ने नौकरी और साहित्यिक लेखन दोनों को बखूबी से निभाया। उन्हें नौकरी से अनेक बार निष्कासित किया गया लेकिन सच्चाई उनके साथ थी। वे नोकरी के निलंबन और उससे जुड़े अनुभवों को अपने आप को

पहचानने का अवसर मानते हैं।उनका निरंतर साहित्यसृजन किसी भी घटना एवं प्रसंग से अवरुद्ध नहीं हुआ।उनकी सृजनप्रक्रिया का केंद्र अनुभव ही रहा है।

गिरिराज किशोर का साहित्य सृजन बहुआयामी है, उन्होंने अपने पाच दशकों के प्रदीर्घ अवधी में साहित्य को उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, निबंधकार एवं आलोचक के रूप में अपना योगदान दिया है। उनके साहित्य से हमें व्यापक अनुभव विश्व के साथ सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि एवं गहरी संवेदनशीलता का परिचय मिलता है। गिरिराज किशोर एक प्रसिद्ध साहित्यकार होने के साथ एक अच्छे इन्सान भी है। सामंती परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी अहंकार उन्हें छू भी न पाया है। उनका वैवाहिक जीवन पूर्णत: संतुष्ट रहा है। पत्नी मीरा ने उन्हें लेखन और जीवन में महत्त्वपूर्ण साथ दिया है। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है। उनके व्यक्तित्व में प्रामाणिकता, संवेदनशीलता, संघर्षशीलता, मिलनसार, गांधीवाद का प्रभाव आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं। तो एक साहित्यकार के रूप में अनवरत लेखन कार्य, मानवीय दृष्टि, सामाजिक दायित्व बोध, प्रयोगशीलता, नारी मुक्ति का समर्थन, वैविध्यपूर्ण एवं बहुआयामी लेखन आदि विशेषताएँ रेखांकित होती हैं। किशोर का साहित्य अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में अनूदित हुआ है। साथ ही वे अनेक पुरस्कार एवं सम्मान के धनी रहे हैं।

संक्षेप में गिरिराज किशोर एक संपन्न व्यक्तित्व एवं एक सशक्त रचनाकार है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने अपने भीतर की भावनाओं को जगाया है। अपने समग्र जीवन में उन्होंने जो भोगा, अनुभव किया उसे शब्दबद्ध कर रचना रूप दिया है।